आपातकाल में सृजन फुलवारी

दीपशिखा 'सागर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

दीपशिखा सागर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-218-0

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण-2020, दीपशिखा सागर

मूल्य-50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DEEPSHIKHA 'SAGAR'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सरस्वती वंदना	6
2.	जान मुश्किल में	7
3.	मत बन	8
4.	उसे मालूम है	9
5.	रखते हैं	10
6.	ज़िन्दगी	11
7.	पड़े हैं	12
8.	मिट्टी	13
9.	क्यों है?	14
10.	नहीं आते	15
11.	ताज़ा ग़ज़ल	16
12.	आँखें	17
13.	क़ैद	18
14.	जिस्म ने रूह पर लिख दिया	19
15.	मान करो	20
16.	दास्ताँ उल्फ़त की	21

सरस्वती वंदना

अंबुज विराजित श्रीप्रदा ब्रह्मा सुता वागेश्वरी
कर पुस्तिका ब्रह्मांड सर्जक ज्ञानदा राजेश्वरी।
करबद्ध है यह प्रार्थना मम लेखनी विस्तार दो,
आओ विराजो कण्ठ में स्वर सप्त सरगम वार दो...!

आकाश में तारावली या चन्द्र की हो चंद्रिका,
सूरज प्रभा के भाल पर अंकित तुम्हारी मुद्रिका।
मेधा सजीवन जीव की संजीवनी है शारदे,
औदार्य से निज कोष का यह मानसी उपहार दो.....
आओ विराजो कण्ठ में....!

वीणा निनादित भाव की पुलकित ह्रदय आगार में,
अर्चन किया है श्वांस ने पलकें बिछा सत्कार में।
वातास सुरभित नेह की तन मन सुवासित कर रही,
मन स्वप्न सज्जित हो खड़े इनको सुगढ़ आकार दो...
आओ विराजो कण्ठ में...!

सुरवन्दिता हो स्वर्ग की देवी अधिष्ठात्री स्वयं,
पूजित सकल त्रैलोक्य में माँ स्थान रखती हो अहम।
वैराग्य मंडित राग से हो सत्यकाम सुहासिनी,
दुर्भावना विद्वेष की हर भावना को मार दो....
आओ विराजो कण्ठ में...!

जान मुश्किल में

हरिक जान मुश्किल में यारा पड़ी है,
बड़ी आफ़तों की ये नाज़ुक घड़ी है,
अगर अब न संभले नहीं हम जो जागे,
तो धरती के सबसे बड़े काल होंगें,
कभी शाद होंगें न खुशहाल होंगे....

दहाने पे बैठे हूए मौत के हम,
बुने जा रहे जाल हैं ख़ुदक़ुशी का।
तरक्की के दामन से हम नोंच लाये
सितारा ही मानव की हर इक ख़ुशी का।
विनाशक बनाये सभी अस्त्र हमने,
जो इक दिन मनुजता का जंजाल होंगे..
कभी शाद होंगे न.....

कोई सभ्यता हो कोई हो रवायत,
मिलाकर हमें हाथ चलना ही होगा,
सबक़ सीखकर अपनी भूलों से हमको,
अँधेरो में दीपक सा जलना ही होगा।
बला ये टलेगी, मुहब्बत हँसेगी
भँवर त्रासदी के न विकराल होंगे...
कभी शाद होंगे....

हरिक युग ने पोसी,हरिक युग ने पाली,
वही भावना साथ रहवास की हो,
दिया सृष्टि ने जो उसे हम सहेजें,
प्रबल कामना संग विश्वास की हो।
सृजन ईश क सर्व उत्तम रहे हम,
सदा उसकी सरगम के सुर ताल होंगे....!

मत बन

मुहब्बत का नया उन्वान मत बन,
ज़माने के लिए आसान मत बन।

नई दुनिया से यूँ अन्जान रहकर,
तू अपने आप से अन्जान मत बन।

मिसाली इश्क़ के चक्कर में पड़कर,
मेरे बाबू किसी की जान मत बन।

अगर सुनना हो दिल की धड़कनें तो,
किसी दीवार के तू कान मत बन।

चलाकर ज़ुल्म ओ नफ़रत की हवाएँ,
मेरे भाई तू पाकिस्तान मत बन।

तलब सच्ची है गर तुझको सुख़न की,
कबीरा मीर या रसखान मत बन।

"शिखा" हर ग़म को दिल में क़ैद करके,
ख़ुद अपने आप में ज़िंदान मत बन।

उसे मालूम है

धड़कनें जिसकी अता है सब उसे मालूम है,
किसके दिल में क्या छुपा है सब उसे मालूम है।

लाख तुम चेहरा बदलकर आमने आओ मगर,
आइना तो आइना है सब उसे मालूम है।

वो दिया हो चाँद-सूरज हो या कोई आदमी,
कौन किस से जल रहा है सब उसे मालूम है।

कौन सा सज्दा कहाँ किसने किया और क्यों किया,
किसके होंठों पर दुआ है सब उसे मालूम है।

आतिश ए ग़म से लिपटकर उफ़ ये हिजरत का धुआँ,
किसलिए बादल बना है सब उसे मालूम है।

फूल के नाज़ुक बदन पर तितलियों ने प्यार से,
क्या इशारे में लिखा है सब उसे मालूम है।

एक मुद्दत से हमारे दिल का हर गोशा 'शिखा'
हाय! क्यों ख़ाली पड़ा है सब उसे मालूम है।

रखते हैं

सजाकर ख़ाना ए दिल में नई तहरीर रखते हैं,
हम अपनी शेर-गोई में अलग तासीर रखते हैं।

कहा छोटे से इक जुगनू ने ये मुँहज़ोर सूरज से,
अगर तुम आग वाले हो तो हम तनवीर रखते हैं।

मुहब्बत, अम्न, यकजहती, वफ़ा, ईसार, हमदर्दी
हम अपने अज़्म के तरकश में सारे तीर रखते हैं।

इसी इक बात पर तो नींद से अनबन सी है जारी,
कि हम आँखों में अपनी ख़्वाब की ताबीर रखते हैं।

न जाने क्यों जहां वाले मेरे इन पाओं के आगे,
कभी पाज़ेब रखते हैं कभी ज़ंजीर रखते हैं।

नमन करती हूँ मैं उनकी फ़क़ीराना मिज़ाजी को,
जो अपने दिल के आँगन में पराई पीर रखते हैं।

किसी की हैसियत ही क्या 'शिखा' उस बाम तक पहुँचे,
जहाँ अपने तख़य्युल को जनाबे मीर रखते हैं।

तासीर- प्रभाव, तनवीर- रौशनी
तहरीर- लिखाई ईसार- स्वार्थ रहित, यकजहती-एकता
ताबीर- स्वप्न का नतीज़ा
अज़्म- संकल्प, तख़य्युल- कल्पना

ज़िन्दगी

साँस चलने का हवाला ज़िन्दगी,
मौत का पहला पहाड़ा ज़िन्दगी।

बस तेरा उन्वान इतना ज़िंदगी,
फ़ूल पर ठहरा सा क़तरा ज़िंदगी।

टूटते ही सर पे हिजरत का पहाड़,
हो गई है पारा-पारा ज़िन्दगी।

अश्क़,आहें, रंज, ख़ुशियाँ, बेकली,
है मुकम्मल इक तमाशा ज़िन्दगी।

दो जहां के बंधनों की क़ैद में,
फड़फड़ाता इक परिंदा ज़िन्दगी।

वायरस का खौफ़ तारी है मगर,
जीतने का रख इरादा ज़िंदगी।

पत्थरों की बस्तियों में है बसर
और तू है एक शीशा ज़िंदगी।

कितनी ठन्डक देती है दिल को मेरे,
चूसती है जब अंगूठा ज़िंदगी।

इश्क़ ने पंखे से रस्सी बांधकर
कर लिया तुझसे किनारा ज़िन्दगी।

देख लेना बन ही जाएगी "शिखा"
मौत के मुँह का निवाला ज़िन्दगी।

पड़े हैं

जबीन ए दिल पे जो छाले पड़े हैं,
उन्हें हम ज़ब्त में ढाले पड़े हैं।

जुनूं की जंग शायद थम गई है,
कहीं खंजर कहीं भाले पड़े हैं।

ख़मोशी की वबा फैली हुई है,
ज़बानों पर अभी ताले पड़े हैं।

चली है हिज्र की जिस दिन से आँधी,
कहीं कंगन,कहीं बाले पड़े हैं।

ख़ुलूस ओ इश्क़, हमदर्दी से ख़ाली,
नई बिल्डिंग के सब माले पड़े हैं।

किसी के एक वादे का सिला है,
मेरी आँखों में जो जाले पड़े हैं।

'शिखा 'हम तेल चाहत के दियों में,
मुसलसल आज तक डाले पड़े हैं।

खुलेगा लॉक डाउन तो मिलेंगे,
अभी तो जान के लाले पड़े हैं।

मिट्टी

जिगर के चाक पे रक़्सां,ये प्यार की मिट्टी,
महक रही है तेरे, इन्तज़ार की मिट्टी।

शिकस्ता-हिज्र के मौसिम में, हमने देखी है,
ख़िजां की शक्ल में, फ़स्ल-ए-बहार की मिट्टी।

गुज़रते वक़्त की मानिंद,मेरे हाथों से,
फिसल न जाए तेरे ,ऐतबार की मिट्टी।

मैं उसके बदले में दे दूँ,जहान की दौलत,
मिले जो मुझको अगर, कू-ए-यार की मिट्टी।

लगी है भीड़ फरिश्तों की, ख़ैरमक़दम को,
ज़रूर है ये किसी,दीनदार की मिट्टी।

किसे ख़बर है कि,हिजरत की,आँधियों के सबब,
कहाँ को जाएगी,किसके दयार की मिट्टी।

सिमट ही जाएगी इक रोज़, सुन ले 'दीपशिखा'
ये तेरे जिस्म की, तेरे हिसार की मिट्टी।

क्यों है?

साफ़ कहने में ये झिझक क्यों है,
मेरे वादे पे तुमको शक क्यों है?

जिसपे चलकर पहुँचते हैं दिल तक,
तंग इस दर्जा वो सड़क क्यों है?

मेरे मोहसिन कि तेरे हाथों में,
साथ मरहम के ये नमक क्यों है?

अर्श तक वो अगर नहीं पहुँचे,
फिर ख़लाओं में ये महक क्यों है?

उनके जाने से एक सन्नाटा,
रूह से दिल के द्वार तक क्यों है?

क्या कोई काम पड़ गया मुझसे,
तेरे लहजे में फिर लचक क्यों है?

पूछता है 'शिखा' से इक दीपक,
तेरी आँखों में ये चमक क्यों है?

नहीं आते

वो अपने घर से निकलकर अगर नहीं आते,
ये चाँद तारे सरे-रहगुज़र नहीं आते।

बड़ा अजीब अँधेरा है आज महफ़िल में,
चराग़ उनकी नज़र के नज़र नहीं आते।

जुबां के तीर हों या अपनी आँख के आँसू,
ये जाने वाले कभी लौटकर नहीं आते।

तलब की आग में दिन -रात जलना पड़ता है,
जनाब तोहफे में इल्मो-हुनर नहीं आते।

गवाही जिसकी ये बूढ़ा दरख़्त देता है,
तुझे क्या याद वो शामो-सहर नहीं आते।

वो घर के बच्चों के फाकों से हो गए वाकिफ़,
परिंदे अब दरो-दीवार पर नहीं आते।

बियाबां दूर तलक है 'शिखा' यहाँ केवल,
किसी के ख़्वाब भी अब चश्म-ए-तर नहीं आते।

ताज़ा ग़ज़ल

ज़िक्र जब आया तुम्हारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल,
दर्द को मैंने पुकारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

याद की कंदील रौशन कर शब ए तन्हाई में,
ज़ख़्म का सदका उतारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

बेख़ुदी से जंग लड़ते इश्क़ के मैदान में,
रूह से जब जिस्म हारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

आसमानों की बुलंदी से किसी के नाम का,
टूटता देखा सितारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

आरज़ूओं के चरागों की भड़कती आग से,
कर लिया मैने किनारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

ख़्वाहिशों की मकड़ियाँ सब जाल बुनने लग गईं,
देखकर उलझा नज़ारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

गीत का ग़ज़लें सुनाना और ग़ज़लों का भजन,
देखकर ये भाईचारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

वक़्त-ए-रुख़सत उसका वो फिर से पलटकर देखना,
एक ही पल में दुबारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

दौर-ए-हाज़िर की 'शिखा' जिद्दत-तराशी देखकर,
ख़ुद-ब-ख़ुद ही पारा-पारा हो गई ताज़ा ग़ज़ल।

आँखें

जिगर की झील जैसी मीर के दीवान सी आँखें,
कलम से टाँकती रहती हूं रौशनदान सी आँखें।

जिसे भी देखिए ख़ुद को फ़रिश्ता ही बताता है,
बहुत मुश्किल है मिल पाएँ कहीं इन्सान सी आँखें।

कहा तितली ने माली से मैं जब घर से निकलती हूँ,
बदन पर चुभने लगती हैं कई अन्जान सी आँखें।

शब ए तन्हाई में अक्सर मुझे बेचैन करती हैं,
किताब ए इश्क़ से लिपटी तेरी जुज़दान सी आँखें।

दयार ए इश्क़ में वापस किसी के लौट आने की,
अभी तक राह तकती हैं मेरी बेजान सी आँखें।

बिछड़ कर शब मुकम्मल चैन से गुज़री चलो माना,
तो इतनी सुर्ख़ फिर क्यों हैं तेरी हैरान सी आँखें।

शिखा सुन तो शिखा मेरी शिखा इक बात तो सुन ले,
कभी आवाज़ देती थीं तेरी गुलदान सी आँखें।

क़ैद

मंदिरों में क़ैद हैं कब मस्ज़िदों में क़ैद हैं,
प्यार के पैग़ाम सारे नफ़रतों में क़ैद हैं।

पायलों में क़ैद हैं कुछ चूड़ियों में क़ैद हैं,
क्यों उड़ानों के तस्व्वुर बंदिशों में क़ैद हैं।

नामे उल्फ़त सिर पटक कर रो रहे हैं ज़ीस्त को,
रंजो ग़म के सारे फ़ितने मयकदों में क़ैद है।

संग दिल इस शह्र में हो कौन अब मुश्किल कुशा,
सबके सब आसानियों की मुश्किलों में क़ैद हैं।

ज़िन्दगी भी रोज़ करती है सलाम आकर उन्हें,
कुछ बड़े सपने जो छोटी गुल्लकों में कैद हैं।

रात अम्बर ने लिखी थी जो गुलों के जिस्म पर,
ख़ुशबुओं की दास्तानें शीशियों में क़ैद हैं।

कान देते ही नहीं मज़लूम की आवाज़ पर,
देवता सारे के सारे पत्थरों में क़ैद हैं।

ज़िन्दगी के हाथ से छूटे हैं बेआवाज़ जो,
मौत के वो सारे लम्हे सिलवटों में क़ैद हैं।

दूरियों में भी न कैसे क़ुर्बतों की हो तपिश,
इस ज़मीं के ख़्वाब सारे बादलों में क़ैद हैं।

अब ख़िरद वालों को जाकर कौन समझाए 'शिखा',
अक्ल के सारे तख़य्युल पागलों में क़ैद हैं।

जिस्म ने रूह पर लिख दिया

जिस्म जैसे कि हो चाँदनी का बदन,
जिस्म जैसे कि उजली सहर की किरण।
जिस्म जैसे दहकता हुआ इक शरर,
जिस्म जैसे कि फूलों भरा इक शजर।
संदली ख़ुशबुओं का सरापा दहर,
वो बहक जाए जो देख ले आंख भर।
ज़ुल्फ़ काली किसी नाग के पाश सी,
बांध लेती थी जो रूह को यकबयक,
आँख में इक नदी कौतूहल की सदा,
दौड़ती पाई जाती इधर से उधर।
जिस्म क्या था हसीं इक महल प्रेम का,
या तराशा हुआ बुत मुसव्विर का ही।
बोलियों में छुपी घण्टियों की सदा,
होंठ जैसे कली कोई खिलती हुई।
आबशारों की चंचल रवानी था जो,
चाँद रातों की रुत भी सुहानी था जो,
रात की शोख़ अल्हड़ जवानी था जो।
शादमां ज़ीस्त की ही कहानी था जो।
ख़्वाब था जाने कितने फरिश्तों का वो,
एक आलम या जैसे रूहानी सा वो।
रूह ने अपना पैकर जिसे था चुना,
जिस्म जैसे दुआ आसमानी ही था,
धड़कनों की हसीं तर्जुमानी ही था।
जिसने ग़ज़लों के आंचल पे तारे जड़े,
और जुनूं के तस्व्वुर में चाहत मढ़ी।
उड़ती तितली के संग संग उड़ा था कभी,
जिस्म जैसे सुलगती हुई आंच था.....
आज बेजान पत्थर सी आंखें लिए,
रहगुज़ार-ए-अना पर सिसकता मिला.....
था जबीं पर लिखा इश्क़ तक़दीर ने,
थी सज़ा एक बस मौत...और मौत बस....
जिस्म ने रूह पर लिख दिया था जिसे... जिस्म ने रूह पर....!

मान करो

कुछ तो टूटा है अंदर कुछ खोया है,
या पीड़ा का बीज जगत ने बोया है।
खाली हाथों में किरचें हैं हसरत की,
या कोई अहसास नींद में सोया है।
स्मित यह होंठों पर सजा बनावट का,
रस्ता देखे हृदय किसी की आहट का?
सन्नाटों का शोर हुआ भारी कबसे,
चीखों में क्यों मौन समाया है आख़िर?
लिखते हो जब हास,रुदन हो जाता है,
दिल बच्चों सा ख़ुद को ही बहलाता है।
चाँद उतारूंगा कल फिर से आंगन में,
थाल नीर का आंगन में रख आता है।
पीड़ा के आंचल में गांठे बाँधे हो,
किन सपनों की बेकल रातें है बोलो?
सांसों में क्रंदन करता है क्या माज़ी,
क्या छूटा है कर से हृदय ग्रन्थि खोलो।
यूँ चुपचाप विवश हो नहीं नियति मानो,
खो जाएगा सब कुछ इतना ही जानो।
मतभेदों को मनभेदों का गार करो,
इतना चाहत से न दुर्व्यवहार करो।
अभी समय है लौटो उर के सावन में,
लहरें उठने भी दो चाहत की मन में।
पीड़ा के इस चक्रव्यूह का दलन करो,
हे!अभिमन्यु चिंतन कर लो, मनन करो।
रण में पाना जीत बहुत आसां लेकिन,
रिश्ते जीते जाते हार ग्रहण करके ....
गीत प्रणय का नया लिखो इस टूटन से
ओ!अभिमानी क्या पाओगे अनबन से....
जाओ फिर से संधि पत्र प्रतीक्षित है,
कोई मन भी क्षमा दान से दीक्षित है.....
उठो! समय है, उठो! प्रणय-सन्धान करो,
प्रेम-पंथ की परिपाटी का मान करो...
मान करो.....!

दास्ताँ उल्फ़त की

पार इस दीवार के रोती है तन्हा शब कोई,
शबनमी आँखों में भरकर दूरियों का रतजगा।
क़ुर्बतों के झूठे टूटे ख़्वाब की कुछ किरचियाँ,
कुछ सुलगते ज़ख़्म हैं अहसास से उठता धूँआ।
दिल के शीशे पर पुता है हिज्र पूरे रंग में,
अक्स कोई भी ख़ुशी का अब नज़र आता नहीं।
चाँद आया था मकान ए ज़ीस्त की चौखट तलक,
इश्क़ के दरबान की नज़रों में थम कर रह गया।
सहमी-सहमी धड़कनों की शाख़ पर सहमा हुआ,
याद का कोई परिंदा चीखता है ज़ोर से।
सांस के जंगल में कोई शोर बरपा हो गया
हसरतों ने बांध ली गठरी सफ़र के वास्ते,
दर्द का अनजान राही साथ चलने को खड़ा।
हर क़दम पर इक ख़यालों का बगूला उठ रहा,
हर नफ़स में नाम उसका है रवां दरिया सा ही।
एक जंगल चीखता है क़ैस का भटकाव ले,
एक लैला गुम हुई सहरा में प्यासी रूह ले।
लम्हा लम्हा दर्द ने चादर समेटी रात की,
धड़कनों ने ख़्वाब की ताबीर सारी नोंच लीं।
इक जहां आकर रुका पलकों की भीगी कोर पर,
हाथ की रेखाओं ने ख़ुद को मिटा डाला यहाँ।
गूँजती है अब सदाएं वारिसान ए मीर की,
कागजों पर जिद्दतों के बांध कर घुंघरू खड़ी,
एक रक्कासा सहर का कर रही है इंतज़ार...
नज़्म की सूरत पिघलता है मेरी चाहत का चांद,
अमृता के साथ साहिर का लिखा बस नाम है,
और रोने लग गईं सारी दिशाएं एक साथ,
ख़ून के आँसूँ झरे हैं अब्र की नम आंख से....
हाँ कि साहिर..रो रही है रात छाती पीटते,
पार इस दीवार के मेहरूमियों के हाथ में,
वस्ल अपनी आख़िरी हिचकी पे तेरा नाम लिख,
दे गया है दास्तां उल्फ़त की दुनिया को नई....
दे गया है दास्ताँ उल्फ़त की दुनिया को नई...!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आपातकाल मतलब संकट का समय.... हर तरफ सिर्फ और सिर्फ तबाही का मंजर ... सम्पूर्ण मानव जाति के अस्तित्व पर खतरा... tv चैनल्स की डरा देने वाली खबरें... जब निराशा के भँवर में डुबोने को तत्पर थीं तभी लेखनी ने हम साहित्यकारों को जैसे किसी नाखुदा की तरह निकाला था इस भँवर से....निरन्तर होने वाले लाइव सेशन्स ने जोड़े रखा साहित्य की दुनिया से.. प्रेरित किया अनवरत सृजन के लिए...परिचर्चाएं, ऑनलाइन काव्य गोष्ठियां काव्य यात्रा की परिचालक बनीं....सच में लेखनी एक ऐसा माध्यम है जो कभी आपको निराशा के गर्त में डूबने नहीं देता....प्रवासी मजदूरों की पीड़ा, अपनों से बिछड़ने का दर्द , लॉकडाउन का अकेलापन और ऊब इन सबका एक ही समाधान पाया ....काव्य सृजन...

और हां नारी के लिए शृंगार तो संजीवन का कार्य करता है तो लाइव सेशन के लिए तैयार भी हुए घर में ही....एक उत्साह, एक आशा, एक आधार और आत्मबल को बढ़ाने में इस आपातकाल की भूमिका निश्चित ही कारगर साबित हुई है।हम भरतीयों की मान्यता पीड़ा में ही सृजन सम्भव है चरितार्थ हुई।

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के इस निःस्वार्थ सृजन कार्य में आदरणीया प्रीति सुराना जी की भूमिका निःसन्देह सृजन शिखर पर स्थापित करती हैं उन्हें....साधुवाद उन्हें और आगामी भविष्य के लिए शुभकामनाएं....

इस आपातकाल में जो भी हृदय के उद्गार शब्दों में परिणित हो सके आपके समक्ष प्रस्तुत हैं...

रचनाकार

दीपशिखा 'सागर'

प्रज्ञापुरम कॉलोनी, गुरैया रोड
छिंदवाड़ा मध्यप्रदेश - ४८०००१

deepshikhasagar6693@gmail.com

9424362777

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-218-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/